माध्वीः गावो भवन्तु नः

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः ।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित परं स्मृतम ॥

गायें स्वर्ग की सीढ़ी है और गायें स्वर्ग में भी पूजनीय हैं। गाय समस्त मनोवांछित वस्तुओं को देने वाली है । अतः गौओं से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है ।
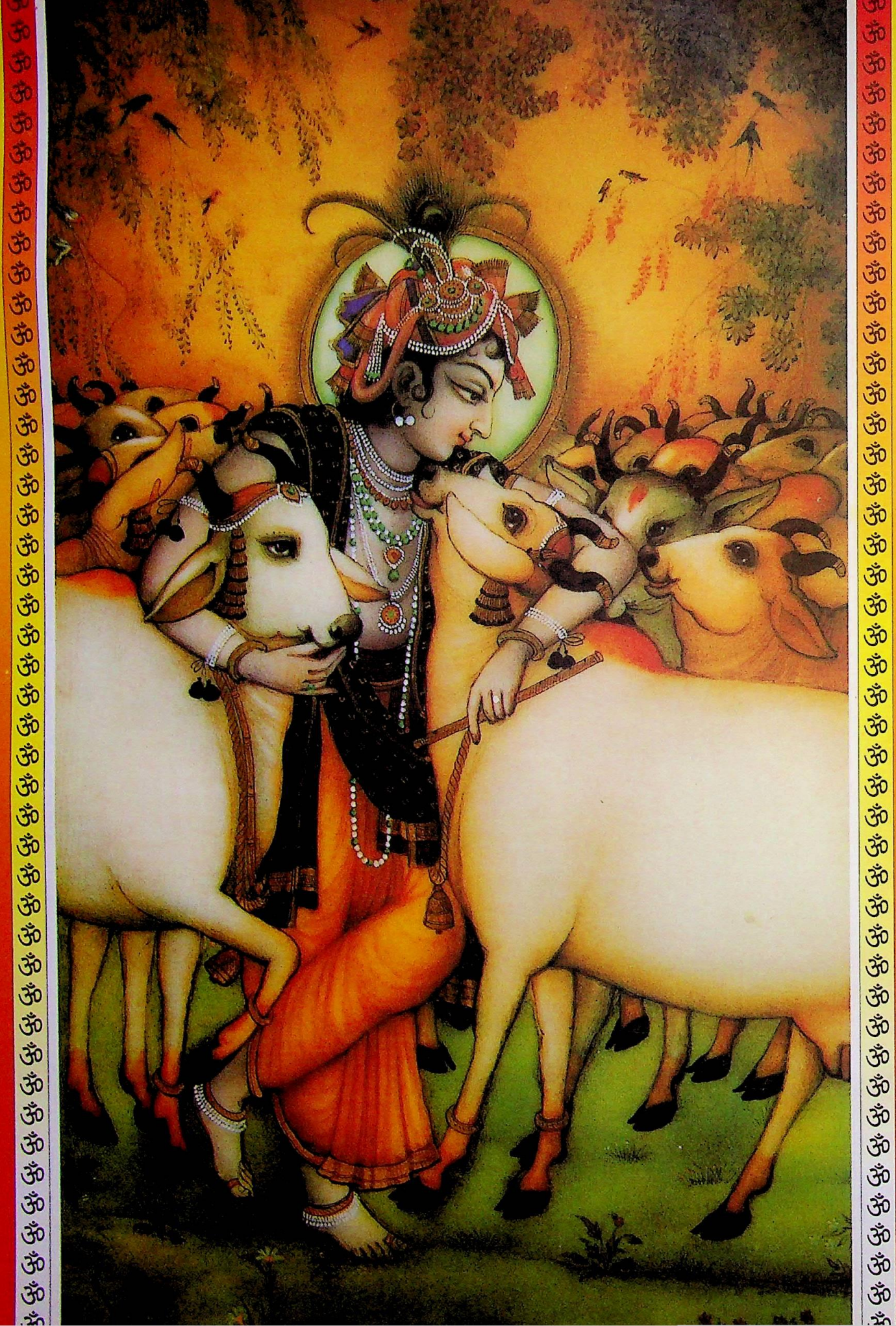
गो नव-जीवन का भण्डार है

- गो प्रियदर्शिनी, शुभदर्शिनी, सर्वहितैषिणी, सर्वार्थ साधिनी, कल्याणकारी प्राणी है ।
- गो माता भारत के सनातन वैदिक धर्म एवं यज्ञीय संस्कृति का मूर्तिमान स्वरुप है ।
- गो भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड है ।
- गो-वंश सम्पूर्ण भारतीय अर्थतंत्र की आधार भूमि है ।
- गोपालन, गोदान हमारी संस्कृति का प्राण है ।
- गो सेवा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का सहज साधन है ।
- गाय के अङ्ग प्रत्यङ्ग में ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र के साथ तैंतीस करोड़ देवता वास करते हैं ।
- गो रक्षा, गोपालन और गोसंवर्धन प्रत्येक धर्म प्राण भारतीय का अनिवार्य कर्त्तव्य है ।
- इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण स्वयं जीवन भर गो सेवा का आदर्श प्रस्तुत कर गोपाल कहलाये ।
- गो माता परब्रह्म श्रीकृष्ण की परम आराध्या हैं और गो माता भवसागर से पार लगाने वाली साक्षात देवी हैं ।
- अतः गायों से कभी द्वेष न करें, उन्हें सदा सुख पहुचायें, उनका उचित सत्कार करें और उनका पूजन करते रहें।
- भारतीय ऋषियों और अवतारी महापुरुषों ने गाय में पृथ्वी पर स्वर्ग निर्माण करने की अपूर्व क्षमता देख कर ही गोवंश को अवध्य घोषित किया है ।

वैदिक काल के तत्व चिन्तकों ने सृष्टि के असंख्य उपादानों में से गाय में छिपे प्रकृति के गूढ़तम तत्व को अनुभूत कर इसे समस्त देवों का समग्र समवाय माना है । कामधेनु इसका प्रतिपादित प्रमाण है । कामधेनु मिथक नहीं वास्तविकता है, जिसको साक्षात ब्रह्म ने अपने सम्पूर्ण ऐश्वर्यों सहित कृष्णावतार में गो सेवा के माध्यम से प्रमाणित किया । इसी रहस्य को वेदों, उपनिषदों, श्रुतियों और पुराणों में विभिन्न प्रकार से वर्णित किया गया है ।

यथा -

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमं सरः ।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥

यजुर्वेद । 23 । 48 ॥

अर्थात् - जिस ब्रह्म विद्या द्वारा मनुष्य परम सुख को प्राप्त करता है उसकी सूर्य से उपमा दी जा सकती है, उसी प्रकार द्यु लोक की समुद्र से तथा विस्तीर्ण पृथ्वी की इन्द्र से उपमा दी जा सकती है, किन्तु प्राणी मात्र के अनन्त उपकारों को अकेली सम्पन्न करने वाली गाय की किसी से उपमा नहीं दी सकती है । गो निरुपमा है वास्तव में गो के समान उपकारी मनुष्य के लिए दूसरा कोई भी नहीं है ।

माता रुद्राणां दुहिता वसूनांस्वसादित्यानां अमृतस्य नाभिः ।

ऋग्वेद 8 ।101 ।15 ।

अर्थात - गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री और आदित्यों की भगिनी है और इसकी नाभि में अमृत है गायों की महिमा के गूढ़ रहस्य को प्रकट करने वाली विद्या के महान् विद्वान महर्षि वशिष्ठ ने गौओं को नमस्कार करते हुए राजा सौदास को उपदेश करते हुए कहा है :-

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् ।
गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी ॥
गावो लक्ष्मीस्तथा मूलं गोषु दत्तं न नश्यति ।
अन्नं हि परमं गावो देवानां परमं हविः ।
स्वाहाकार वषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ ॥

अर्थात - गायें ही भूत और भविष्य हैं, गायें ही सदा रहने वाली पुष्टि का कारण तथा लक्ष्मी की जड़ हैं, गायों को जो कुछ दिया जाता है उसका पुण्य कभी नष्ट नहीं होता । गायें ही सर्वोत्तम अन्न की प्राप्ति में कारण हैं वे ही देवताओं को उत्तम हविष्य प्रदान करती हैं । स्वाहाकार (देवयाग) और वषट्कार (इन्द्रयाग) ये दोनों कर्म सदा गायों पर ही अवलम्बित हैं ।

गवां मूत्रं पुरीषं च पवित्रं परमं मतम् ।
कुष्ट रोगं निहन्त्याशु गो मूत्रं नित्य सेवितम् ॥

(विष्णु घर्मोत्तर)

गो मूत्र के नित्य सेवन से कुष्ठ रोग नष्ट हो जाते हैं ।

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च । तद्गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः ॥
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलकं कुरुते नरः । तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे ॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम् । प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम् ॥

गौ के शरीर में समस्त देवगण निवास करते हैं और गौ के पैरों में समस्त तीर्थ निवास करते हैं । गौ के गुह्यभाग में लक्ष्मी सदा रहती है। गौ के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक जो मनुष्य अपने मस्तक में लगाता है, वह तत्काल तीर्थजल में स्नान करने का पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पद-पद पर विजय होती है । जहाँ पर गायें रहती हैं उस स्थान को तीर्थ भूमि कहा गया है, ऐसी भूमि में जिस मनुष्य की मृत्यु होती है वह तत्काल मुक्त हो जाता है, यह निश्चित है ।

सर्वे देवा: स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ: ।

गाय के शरीर में सभी देवताओं का निवास है, अत: गाय सर्वदेवमयी है।

गो शुश्रुषा के सन्दर्भ में

गोश्च शुश्रुषते यश्च समन्वेति च सर्वश: ।
तासौ तुष्टा प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान् ॥

जो पुरुष गायों की सेवा करती है और उनका सब प्रकार अनुगमन करता है, उस पर सन्तुष्ट होकर गायों उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं।

तृणोदकादि संयुक्तम् प्रदद्यात् गवाह्निकम्
सोऽश्वमेधसमं पुण्यं लभते नात्र संशय ॥

बृहत्पराशर स्मृति

जो गायों को भोजन के लिए प्रतिदिन जल और तृण सहित कुछ भोजन प्रदान करता है, उसे अश्वमेध के समान फल की प्रप्ति होती है - इसमें तनिक भी संदेह नहीं है

तासां प्रचार भूमिं तु कृत्वा प्राप्नोति मानव:
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्य संशयम् ।
तासामौषधदानेन विरोस्त्वभिजायते
विप्रमोच्भयेभयश्च न भयं विद्यते क्वचित ॥

विष्णुधर्मोत्तर पुराण

गायों के प्रचारण के लिए गोचर भूमि की व्यवस्था करने से रुग्णवस्था में गायों को औषधि प्रदान करने से मनुष्य स्वयं भी भयों से मुक्त हो जाता है और निसन्देह अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है ।

श्री सत्यनारायण दास (एम.टैक., आई.आई.टी.-दिल्ली, पी.एच.डी.-संस्कृत) गाय के लिए चारा काटते हुए

विज्ञानियों के विचार

हमारे ऋषि मुनियों का चिन्तन विज्ञान का कसौटी पर शत प्रतिशत सही उतरा है । विश्व के वैज्ञानिकों ने उसे स्वीकृति भी दी है । वही चिन्तन कहता है कि देश का आर्थिक, वैज्ञानिक एवम् पर्यावरणीय सहज विकास गौ और - गौ-वंश से ही सुनिश्चित है ।

गो दूध का वैज्ञानिक महत्व

- इन्टरनेशनल कार्डियोलोजी कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा. शान्तिलाल शाह के मत से हृदय रोगियों के लिए गाय का दूध विशेष रुप से उपयोगी है।
- गाय के दूध के कण सुक्ष्म और सुपाच्य होते हैं - अत: वह मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाड़ियों में पहुँच कर मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करते हैं।
- गाय के दूध में केरोटीन (विटामिन ए) नाम का पीला पदार्थ रहता है, जो आँख की ज्योति बढ़ाता है।
- गाय का दूध जीवन शक्ति प्रदान करने वालो द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है । (चरक सूत्रस्थान 1/18)
- गाय के दूध में 8 प्रतिशत प्रोटीन, 8 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 0.7 प्रतिशत मिनरल्ज़ (100 आई.यू.) विटामिन ए और विटामिन बी, सी, डी एवं ई होता है ।
- निघण्टु के अनुसार गाय का दूध रसायन, पथ्य, बलवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, बुद्धिवर्द्धक, आयुप्रद, पुंसत्वकारक तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) नाशक है ।

गाय के घी का वैज्ञानिक महत्व

- गोघृत खाने से कोलोस्टरोल नहीं बढ़ता ।इसके सेवन से हृदय पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता ।
- रुसी वैज्ञानिक शिरोविच के शोधानुसार गाय के घी में मनुष्य शरीर में पहुँचे रेडियो-धर्म-कणों का प्रभाव नष्ट करने की असीम शक्ति है ।
- गोघृत से यज्ञ करने से आक्सीजन बनता है । गाय के घी को चावल के साथ मिलाकर जलाने से (यज्ञ) ईथीलीन आक्साइड, प्रोपीलीन आक्साइड और फोरमालाडीहाइड नाम के गैस पैदा होते हैं। ईथीलीन आक्साइड और फारमलडीहाइड जीवाणु रोधक हैं जिसका आपरेशन थियेटर में कीटाणु रहित करने में आज भी उपयोग होता है। प्रोपीलीन आक्साइड वर्षा करने के उपयोग में आता है - अर्थात गोघृत द्वारा किए गये यज्ञ से वातावरण की शुद्धि और वर्षा दोनों स्वभाविक परिणाम हैं ।
- भाव प्रकाश निघण्टु के अनुसार गो-घृत नेत्रों के लिए हितकारी, अग्निप्रदीपक, त्रिदोष नाशक, बलवर्द्धक, आयुवर्द्धक, रसायन, सुगंधयुक्त, मधुर, शीतल, सुन्दर और सब घृतों में उत्तम होता है।
- गोनवनीत (मक्खन) हितकारी, कान्तिवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, महाबलकारी, वात, पित्त नाशक, रक्त शोधक, क्षय, बवासीर, लकवा एवं श्वास रोगों को दूर करने वाला होता है।

गोमूत्र का वैज्ञानिक महत्व

- गोमूत्र में ताम्र होता है जो मानव शरीर में स्वर्ण के रुप में परिवर्तित हो जाता है। स्वर्ण सर्व रोग नाशक शक्ति रखता है । स्वर्ण सभी प्रकार का विषनाशक है ।
- गोमूत्र में ताम्र के अतिरिक्त लोहे, केलशियम, फोसफोरस और अन्य प्रकार के क्षार (मिनरल्ज), कार्बोनिक एसिड, पोटाश और लेक्टोज़ नाम के तत्व मिलते हैं ।
- गोमूत्र मे 24 प्रकार के लवण होते हैं जिनके कारण गोमूत्र से निर्मित विविध प्रकार की औषधियाँ - कई रोगों के निवारण में उपयोगी हैं।
- गोमूत्र कीटनाशक होने से वातावरण को शुद्ध करता है और ज़मीन की उर्वराशक्ति को बढाता है।

- गोमूत्र त्रिदोष नाशक है, किन्तु पित्त निर्माण करता है । काली गाय का मूत्र पित्तनाशक होता है ।
- नवयुवकों के लिए गोमूत्र शीघ्रपतन, धातु का पतलापन, कमजोरी, सुस्ती, आलस्य, सिरदर्द क्षीण स्मरण - शक्ति में बहुत उपयोगी है ।
- पंचगव्य घृत गोमय, गोदधि, गोदुग्ध, गोमूत्र से मिलकर बनता है । इसका सेवन मिर्गी, दिमागी कमजोरी, पागलपन, भंयकर पीलिया, बवासीर आदि में बहुत उपयोगी है ।
- कैंसर जैसे दुस्साध्य और उच्च रक्तचाप तथा दमा जैसे रोगों में भी गोमूत्र सेवन अत्याधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है ।

गोबर का वैज्ञानिक महत्व

- ईटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जी.ई. बीगेड ने गोबर के अनेक प्रयोंगो द्वारा सिद्ध किया है कि गाय के ताजे गोबर से टी.बी. तथा मलेरिया के कीटाणु मर जाते हैं ।
- आणविक विकिरण से मुक्ति पाने के लिए जापान के लोगों ने गोबर को अपनाया है ।
- गोमय मरहम त्वचा के दाद, खाज, एक्जिमा और घाव आदि के लिए लाभदायक होता है ।

गाय के गोबर से पर्यावरणीय सरंक्षण

- सिर्फ एक गाय के गोबर से प्रतिवर्ष 4500 लिटर बायोगैस मिलता है । बायोगैस के उपयोग से 6 करोड़ 80 लाख टन लकडी जो आज जलाई जाता है, बच सकती है, जिससे 14 करोड़ वृक्ष कटने से बचेगें और देश के पर्यावरण का सरक्षंण होगा।
- गोबर सर्वोत्तम खाद है ।

भारतीय अर्थव्यवस्था में गोमाता का योगदान

- राष्ट्रीय आय में 15,000 करोड़ रुपये की राशि प्रति वर्ष गोवंश से प्राप्त होती है ।
- 30 हजार मेगावाट अश्वशक्ति गोवंश से प्राप्त होती है ।
- गाय-भैंस से 5 करोड़ टन से अधिक मूल्य का दूध हमें आज प्राप्त होता है ।
- पशुओं से 55 करोड़ रुपये का 22 लाख टन गोबर हमें प्रतिदिन प्राप्त होता है ।
- एक गाय अथवा बैल के गोबर से एक वर्ष में 36 बोरा यूरिया, 18 बोरा सुपर फास्फेट तथा 54 बोरा पोटाश प्राप्त होता है ।
- सूखी गाय (बिना दूध देने वाली गाय) से भी समाज को प्रतिवर्ष 2 टन खाद्यान तथा भूसा प्राप्त होता है ।
- सूखी गायों एवं बूढ़े बैलों के गोबर से गैंस प्लांट लगाकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के निर्धन परिवारों को 18500/रु. वार्षिक आय हो सकती है ।
- वर्ष 1992 में लगभग 600 करोड़ रुपये के मूल्य की 7.76 मिलियन टन खली निर्यात की गई जबकि दुधारु पशुओं को यही खली खिलाने पर 38 हजार करोड़ रुपये के मूल्य का (खली से प्राप्त मूल्य का 42 गुना अधिक) 38.8 मिलियन टन दूध देश को प्राप्त हो सकता था ।
- गोवंश से लाखों गैलन गोमूत्र (स्वदेशी प्राकृतिक कीटनाशक) प्रतिवर्ष प्राप्त होता है, जो फसलों के लिए सर्वश्रेष्ठ कीटनाशक और अनेक रोगों में औषधि है ।
- भारत में कृषि कार्य हेतु पशुशक्ति का सर्वाधिक 66 प्रतिशत, मनुष्य शक्ति का 20 प्रतिशत एवं जीवाश्म शक्ति का 14 प्रतिशत सहभाग है ।
- कृषि क्षेत्र में गाय व गोवंश के असीमित उपयोग एवं लाभ के कारण ही उच्चतम न्यायालय ने 1958 में कहा था कि गाय व गोवंश भारतीय कृषि की रीढ़ है ।
- देश को मांस के निर्यात से प्राप्त होने वाले प्रति 1 करोड़ रुपयों के फलस्वरुप 15 करोड़ रुपयों की हानि उठानी पड़ती है । (वेजिटेरियन सोसाईटी ऑफ इण्डिया)

महापुरुषों की दृष्टि में गाय

- गो भगवान की भी भगवान है । *– सतं शिरोमणि श्री हरिदास शास्त्री*
- जब तक गोमाता का रुधिर भूमि पर गिरता रहेगा, कोई भी धार्मिक सामाजिक अनुष्ठान सफल नहीं होगा । *–देवराहा बाबा*
- यदि हम संसार में हिन्दू कहलाकर जीवित रहना चाहते हैं तो सर्वप्रथम प्राणप्रण से हमें गोरक्षा करनी होगी । *–प्रभुदत्त ब्रह्मचारी*
- एक गाय अपने जीवनकाल में 4,10,440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटा सकती है जबकि उसके मांस से केवल 80 मांसाहारी एक समय ही अपना पेट भर सकते हैं । *–स्वामी दयानन्द सरस्वती गोकरुणानिधि*
- गाय का दूध रसायन, गाय का घी अमृत तथा मांस बीमारी है। *– पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहेब*
- एक बैल को मारना एक मनुष्य को मारने के समान है । *–ईसा मसीह*
- कुरान और बाईबल, दोनों धार्मिक ग्रन्थों का मैंने अध्ययन किया है । उन ग्रन्थों के अनुसार अप्रत्यक्ष रुप से भी गोहत्या करना जघन्य पाप है । *–आचार्य विनोबा भावे*
- गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है। *–महात्मा गाँधी*
- गाय एवं अन्य पशुओं की निर्दयता पूर्वक हत्या जब से प्रारम्भ हुई है, हम अपने बच्चों के भविष्य के प्रति चिंतित हो गये हैं । *–लाला लाजपत राय*
- चाहे मुझे मार डालो, पर गाय पर हाथ न उठाओ । *–लोकमान्य तिलक*
- भारत में गोपालन सनातन धर्म है । *– भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र बाबू*
- भारतीय संविधान में पहली धारा सम्पूर्ण गोवंश हत्या निषेध होनी चाहिये । *–पं. मदन मोहन मालवीय जी की अन्तिम इच्छा*
- गोहत्या हेतु मुस्लिम आग्रह मूर्खता की पराकाष्ठा है । *–सुल्तान अहमद खान*
- मेरे विचार से भारत की वर्तमान परिस्थिति में गोहत्या निषेध से बढ़कर कोई वैज्ञानिक तथा विवेकपूर्ण कृत्य नहीं है । *–जय प्रकाश नारायण*
- गोवंश के प्रति प्रशासन का अपमानजनक व्यवहार ब्रिटिश शासन के धृणित कार्य के रुप में जाना जाएगा । *–लार्ड लिनलिथगो*
- गाय हमारी अर्थव्यवस्था का आधार है । *– ज्ञानी जैलसिंह, पूर्व राष्ट्रपति*
- न तो कुरान और न अरब देशों की प्रथा ही गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है। *–हकीम अजमल खान*

गोषु भक्तिश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः । स्त्रियोदपि भक्तया या गोषु ताश्च काममवाप्नुयुः ॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवापनुयात् । धनार्थी लभते वितं धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात् ॥
विद्यार्थी चाप्नुयाद विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम् । न किंचिद् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत ॥

(महा. अनु. 83/50-52)

हे भारत ! गोभक्त मनुष्य जिस जिस वस्तु की इच्छा करता है वह सब उसे प्राप्त होती है। स्त्रियों में भी जो गौओं की भक्त हैं, वे मनोवांछित फल प्राप्त करती हैं । पुत्रार्थी मनुष्य पुत्र पाता है कन्यार्थी कन्या, धन चाहने वाला धन और धर्म चाहने वाला धर्म, विद्यार्थी विद्या और सुखार्थी सुख प्राप्त करता है गोभक्त के लिए यहाँ कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।

तृणोदकाद्येषु वनेषु मत्ताः क्रीडन्तु गावः सवृषाः सवत्साः ।
क्षीरं प्रमुञ्चन्तु सुखं स्वपन्तु शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः ।।

जल एवं वनस्पतियों से पूर्ण वन मे गाय, बैल और बछडे सुखपूर्वक दूध देते हुए (दूध पीकर) शीत, गर्मी एवम् व्याधियों के भय से मुक्त रहकर खेलते है ।

श्रुति, स्मृतियों के अनुसार आय का दशांश (दसवां भाग) बिना धार्मिक कार्यों में खर्च किए धन, उपभोग-योग्य नहीं होता।

यज्ञ शिष्टासिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विशैः ।
भुञ्जन्ते ते त्वघं पापा ये पच्यन्ति आत्मकारणात् ॥

– गीता

अर्थात उपार्जित धन का एक उचित भाग दान किए बिना केवल अपने लिए उपभोग पाप का भोग है। इस पाप से मुक्ति के लिए गाय की सेवा (गोपालन गोसंरक्षण, गो संबर्धन) सर्वोत्कृष्ट, सहज सर्व सुलभ साधन है।

गौ सेवा रुपी आदर्श को सार्थक बनाने के लिए परम पूज्य स्वनामधन्य अनन्त श्री विभूषित श्रोत्तिय ब्रह्मनिष्ठ संत शिरोमणि श्रीमद् हरिदास शास्त्री जी महाराज, काव्य व्याकरण, षडदर्शनाचार्य (न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, साख्य योग) एवं वैदिक वाङ्मय में निष्णात्, कृष्ण की लीला-भूमि पुरानी कालीदह वृन्दावन में देवभाव से गोपालन, गोसंरक्षण, गो संबर्धन को ही परमलक्ष्य एवं लोककल्याण का परम साधन मानकर विगत पचास वर्षों से अपना सम्पूर्ण समय अपने परमनिष्ठ शिष्य संत श्री सत्यनारायण दास (एम.टैक., आई.आई.टी.-दिल्ली, पी.एच.डी.-संस्कृत) के सहयोग से गो-शाला को माध्यम बनाकर गोसेवा में व्यतीत कर रहे हैं। परम आदरणिय संत द्वय की गोभक्ति एवं गोमाता की सेवा भी अनूठी है, जिसे वे कृष्णवत् चरितार्थ कर रहे हैं।

ऐसे परम तपोनिष्ठ, ज्ञान-विज्ञ संत, जिन्होंने अस्सी वेदान्त ग्रन्थों का सम्पादन किया है, गोसेवा, भगवत चिन्तन एवं शास्त्र-संर्बधन में ही अपने अठारह घंटे प्रतिदिन व्यतीत करते हैं।

अस्तु धर्मसम्मत, शास्त्रोक्त विचारों को मान कर अपने आत्मकल्याण एवं सम्पूर्ण मनोकामना की सिद्धि के साथ पारलौकिक कल्याण साधन हेतु सहयोग की आकांक्षा रखने वाले भक्त निम्न पतों पर सम्पर्क कर धर्म लाभ उठा सकते हैं।

1. श्री हरिदास शास्त्री निवास गोशाला
   पुरानी कालीदह वृन्दावन, मथुरा
   उ०प्र० 281121
   दूरभाष : 0565-44098

2. जीव ईन्सटिट्यूट ऑफ वैष्णव स्ट्डीज़
   380, शीतल छाया, रमण रेती – वृन्दावन
   उ०प्र० 281124
   दूरभाष : 0565-442904, 444685

निवेदक- ***जीव ईन्सटीट्यूट***
1144, सैक्टर-19, फरीदाबाद (हरियाणा)-121002
दूरभाष : 91-129-296174 **टेली/फैक्सः** 91-129-295547
e-mail: info@jiva.org **Internet**: http://www.jiva.org

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं, संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम् ॥

स्पर्श कर लेने मात्र से ही गायें मनुष्य के समस्त पापों को नष्ट कर देती हैं और आदर पूर्वक सेवन किये जाने पर सम्पत्ति प्रदान करती हैं ।

समिन्द्र, राया समिषा रभेमहि संवाजेभिः पुरुश्चन्द्रैभिद्युभिः ।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि ॥
(ऋग्वेद 1.53.5)

वेद भगवान का निर्देश है कि यदि किसी को इस माया-राज्य में सब प्रकार का वैभव प्राप्त करना है तो गौ माता की प्रमुख रुप से सेवा करें।
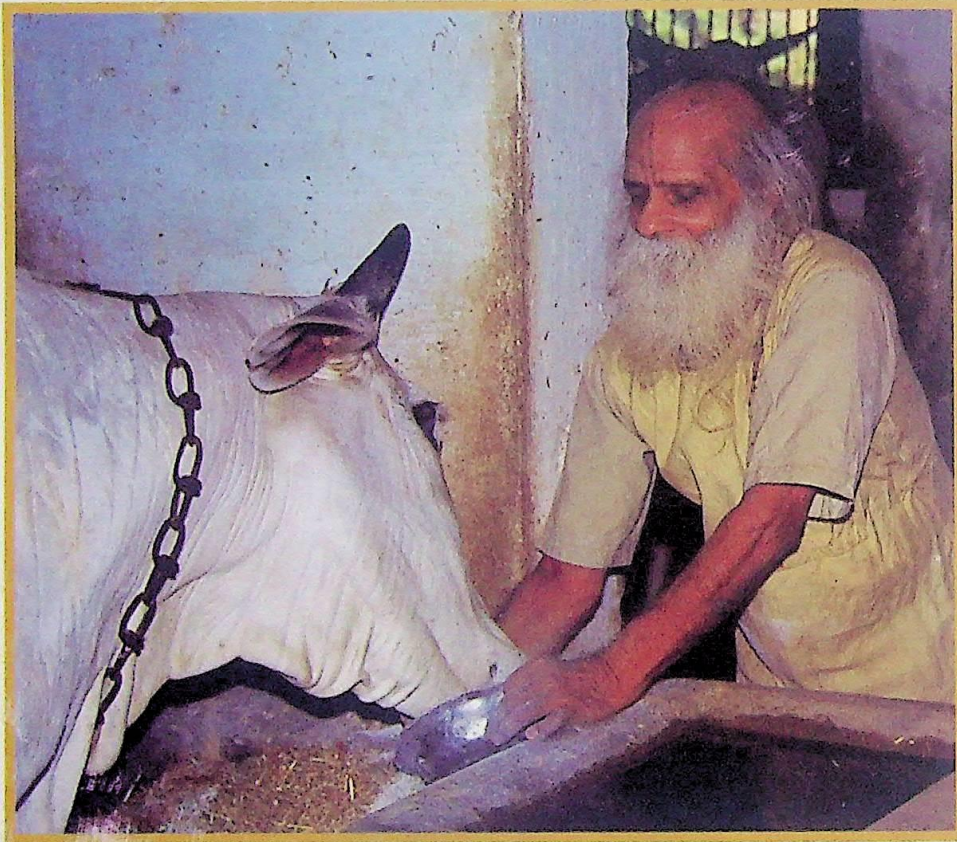
हम सभी वेद, पुराण और शास्त्रों को श्रद्धा और विनयपूर्वक मानते हैं। इन सभी ने गोमाता में तेंतीस करोड़ देवताओं का वास प्रतिपादित किया है । अर्थात गोमाता स्वयं में एक साक्षात् देव-मन्दिर है, जिसकी सेवा मात्र से समस्त देवगणों की प्रसन्नता एवं अनुकूलता प्राप्त हो सकती है । अतः आप सभी अपने आसपास अथवा शहर में गोशाला खोलें तथा उसे मन्दिर मानकर तन, मन व धन से सहभागिता कर अपना जीवन सार्थक करें ।

- गाय भगवान की भी भगवान है ।
- गो सेवा से भगवत् प्राप्ति होती है ।
- गो सेवा से समस्त पापों का प्रायश्चित होता है ।
- गो सेवा सुख, शान्ति और समृद्धि प्रदान करती है ।
- चूंकि गो में समस्त देवता निवास करते हैं, अतः गो सेवा पूर्ण है ।
- सभी यज्ञ, दान, हवन, ग्रह शान्ति आदि का पुण्य गो सेवा से प्राप्त होता है ।

संकलनकर्ताः नरेश शर्मा
सी-486, सैक्टर-19, नोएडा-201301
फोन : 011-8-4557770; 4552121
e-mail : nareshnoida@usa.net

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ संत शिरोमणि
श्रीमद् हरिदास शास्त्री जी महाराज

Printed at IPP Ltd. New Delhi